१०२ सर्पसंहिता [illegible] थाकं [illegible] [illegible] पिज्वलं [illegible] पूजा विधि

ASHA ARCHIVES 3116

सं ८८० [illegible] पद [illegible]

सं ८८८ [illegible] [illegible] नायनन श्री [illegible] [illegible] दिन श्री [illegible]

[illegible] सं ८८८ [illegible] पद [illegible] १३ [illegible]

[illegible] दिं सं ८९० कार्त्तिक शु [illegible] [illegible] दिन [illegible] श्री [illegible] थि नायर

यानाक्व [illegible] [illegible] [illegible] श्रीनील नायनन [illegible]

नेन [illegible] ॥ सं ८ [illegible] शु [illegible] १० श्री [illegible] नायन [illegible] दिन ।

[illegible] [illegible] कायन [illegible]

ॐ स्वस्ति श्री ह्रूं [illegible] ह्रूं वृव श्रावणाय । पिवासीमम नृस्वधंमद्वाव । स्वसि

[illegible] ऊ ०य भवस्तु स्मिं [illegible] ०माजाम्निप्राणि वत्तू गा नीं ॥ उयया भ

गृहीगामान्हाय [illegible] म [illegible] न [illegible] याति निन्हाय [illegible] म [illegible] न ॥

॥ [illegible] मह्नीं [illegible] ०ह्रूं [illegible] नृपदाव [illegible] उन द्विव [illegible] भूमिन ० स्त

[illegible] विचेवी [illegible] या [illegible] ० [illegible] ० [illegible] ० [illegible] सि ह्रूं

[illegible] सिम [illegible] त्वे [illegible] यानि म्न्दि [illegible] य [illegible]

[illegible] ० व [illegible] म

[illegible]

[illegible] याति म्नद

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] द [illegible] ना ॥ [illegible] ॥

[illegible] या ० ॥ । ॥ ॐ नमः श्री [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नि [illegible]

[illegible] नीं । [illegible] म [illegible] आवव

[illegible] विदाविव । [illegible] यिमा [illegible] यिमा [illegible] नासर्प

[illegible] ॥ [illegible] मही [illegible] मा [illegible] नी [illegible] घवा ना

म क्रा याम ऊन्दु गिवाऊ हगीवस्यानूवाम। वाऊ भनयूनूहूगं।
ऊवालोयिसी ऊमर्त्यो जलमार्णदीवा यिवायिव। जतिग्रमरी
वायिमाह २ ऊतिग्रमही वाहिमाहा। ओहावाग्र सर्यसुवारो
२। हाउ ३ वा। चर्षणीधृतंमघवानमूक्था मू। हाउ ३ वा। ऊन्दु।
गिवाऊ हगीवस्यनूग्रगावा। ऊभनंयूनूहूगंमऊ कितिर्४। हाउ ३
ऊमर्त्यो नरमार्नदिवदिव। हाउ ३ वाउत्सयसुवा॥ २॥ हाउ ३
वासुव४संसर्पेन्द्र सगा। विश्वस्यपरम ... वाउसि। हाउ ३ वासु

व४संसर्पेन्द्रनकिष्ट्वा। गमरूरष्वगं। हाउ ३ वासुव४संसकाउस
र्प्येता। ... गसुवर्नमवमवर्यौ॥ ४॥ सुव४संसर्पेसंसर्प्यासुव
४संसार्पेसंसायाउओहावागवदिन्द्रामवसु। नकिष्ट्वा। गमसूरष्व
गं। सुव४संसार्पेसंसर्पे २ सुव४संसार्पेसंसार्पे ओहावा। सुव
र्णभमा॥ ५॥ सूयायग्रसूया ऊ हा ऊ यासू ३। जतिप्रियानिय
ऊगंवानाहायिमानानामायज्ञाऊ धियइवाहौ। नायिक्रासुर्य
स्यवृद्धगावृहानाधीरथं विश्वमद्गदीवाक्रानां। सूयायग्रस

यायउहाँ ह्रूया। उँहावा। नह्रयायप्रह्रपाय। नह्रयायप्रह्रया
या॥७॥ह्रयायायप्रह्रपा उहाँ ह्रूया। ह्रयावर्यंभनसामा। ह्रवह्र
र्त विविनूयामगाध्व ७। वन्नो मित्रावव्रूणो मामह्रन्नामू। सूदि
मि ४ सिं न्यू ४ पृथिवी उम यो ४॥ ह्रयायप्रह्रयाउहाँ ह्रूया। ह्र
यायप्रह्रयाउहा ह्रूया। उँहावा। नमूव ४। २। नमूवा॥ ७ ॥
ह्रपायप्रह्रयाउहा। २ ... यायं वर्यं पवमाभनमा। ह्रवह्रर्त
विवियामगाध्व ७। वन्नो मित्रावव्रूणो मामह्रन्नामू। सूदि

मि ४ सि न्यू ४ पुथिवीमनायो ४ ह्रयायप्रह्रयाउहा। ह्रयायप्र
ह्रयाउहा। उँहावा। वासू ४ नमूव ४॥ ८ ॥ स्वाहा त्रिकावि
हूवमा। हाउ। मध्व ४ पिवक्लि मौचिलानहाउ। या ह्रूं माभयाव
वानहाउ २ वृक्षमर्दनि मोह्रवानहाउ। वद्यावनूस्वनाद्वि
याभहाउ वा। नदिग ४ यादिग ४ कूपोमा। उँहोवा। नमाउ
गभमयाभभमा॥ ९ ॥ स्वाहा त्रिकाविभूवना उहाउ। म
ध्व मध्व ४ पिव क्लिमौचि उहाउ। जाह्रूं ह्रूमायावयाउहाउ

ह्रि [illegible] मर्द गौरस्या उहाउ । वस्त्रीय सूत्र वाजियाना. हाउ
वा। उउ द्वित्तो विदिशः कथा ना तीहावो । उ वि वाय यज्ञम
स्व वायं नमः सा ॥ १० ॥ ॐ मित्र पर्य सहित्रा दगकेसमाकं ॥
ॐ माम ॥ ॐ माम सूर्यः ॐ ह्रः का धनवः सन्त्व काचदनच दनच गनचर गनचउ स
हस्त्र श्री सहस्त्र चस यून चस, यून चउ, नियुन चउ नियुन चउ प्रयुत चस, वृंद चउ चार्बु
द [illegible] समुद्र मध्या चस, [illegible] प्रवार्द्ध ॐ माम ॐ [illegible] ॐ ह्रः का धनवः सन्त्व मूला
मू [illegible] ॥ कं [illegible] जल दे वि जल पूर अर्धं धूं । मैत्र मिति ॥
स्वाहा ॥ १०० ॥

१ थो [illegible] ॥ ॥ नमः पञ्चरक्षा कृत्या, [illegible] पूजाविधिः ॥ ॥
सूर्य ॥ [illegible] [redacted] ॥ पं चक्र मत्त, दाहुजन्य
[illegible] दिष्ट शान्ति, सम [illegible] विवाजाना मायुनाना काम नार्थ, ब्रह्म विष्णु
महेश्वर, ववून, पूजा कर्तु श्रीसूर्या यार्घालमः ॥ ॥ उ यूनमस्का व, सूर्यपा
र पूजा ॥ न्यास याय ॥ ॥ मनी धा या यन्त्रं ॥ न वाजा मित्र ध्या दि ॥ ॥
धूप पात्र पूजा ॥ ॐ व ह्मा (प्रजाप तये ॐ दमास नं नमः पूर्य नमः ॥
ध्यानं ॥ ॐ पीनं पीन च तु र्बाहुं ब्रह्माणं चतुराननं । हंसयानचरं विचाणम दक्षा

लोकमणुतां ॥ ब्रह्म ध्यानपुष्पीनमः ॥ वंद ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं ॥ स्तोत्र ॥ जापे
॥ ॐ पद्मयोनिचतुर्मूर्त्तिं मूर्द्धिस्थाननिवासिनः । स्फटिककर्णलकानित्यं
नमस्ते ब्रह्म ... नमः ॥ ॥ ब्रह्मार्च्चनविधि ... सर्वविधिपतिपूर्णं नमस्तु ॥ ॥
यवपात्र पूजा ॥ ॐ विष्णुमूर्त्ति ॐ दमासनेनमः ॥ पुष्पीनमः ॥ ध्यानं ॥ ॐ अनन्त
पद्मनीकादौ, ... गगने ... विद्युद्दामप्रभीकान्ती, कूर्मांतुरूप पूजयेत् ॥
ॐ विष्णु ध्यानपुष्पीनमः ॥ वंद ॥ ॐ गीतिपदा ॥ धूप, दीप, जाप, स्तोत्र ॥ ॥
... मनके नाम विष्णुं । पातालवासिनं नित्यं, मनके ...

६२

माघ्यहे ॥ ... आदि ॥ माषपात्र पूजा ॥ ॐ गणेशमूर्त्ति ॐ दमासनेनमः पुष्पीनम
ः ॥ ध्यानं ॥ ॐ ... नवृषराजारूढं, त्रिशूलं ... ध्यानितं । गजचर्म्म... चन्द्रमौ
लि त्रिलोचनं ॥ ॐ गणेशमूर्त्ति ध्यानपुष्पीनमः ॥ वंद ॥ ॐ नमीशानं ॥ धूप, दीप,
जाप, स्तोत्र ॥ ॐ सर्वविद्याधिपादेव, ॐ ... नाम नाम नमः । शूलपाणिध्वजादे
व, ॐ ... नायनमास्तुते ॥ गणेशार्च्चनविधि ॥ ॥ मुद्गव्रीहि पात्र पूजा ॥ ॥
ॐ ॐ इन्द्राय, वज्रहस्ताय, ऐरावतासनाय, ॐ दमासनेनमः ॥ पुष्पीनमः ॥ ॥
ध्यानं ॥ ॐ ऐरावतगजारूढा, हेमवर्णं महाद्युति । वज्र सहस्रनयनं, व

नागादीर्व्विशाबुजन ॥ नक्रमूर्ल ध्यानपुष्पं नमः॥ गृह्ण अर्घ्य ॥ वंद ॥ ॐ नागानमिन्द्र
॥धूप दीप जाप स्तोत्र ॥ ॐ ह्रूं सूतपतिश्चैव वज्रहस्तामहाबलः सर्व्वयक्षा-
धिपाद्देव गक्रनाजनमाम्युत ॥ जूतगन्धादि ॥ ॥ प्रियी गुड्डी पात पूजा ॥
ॐ वनूनाय पंनसहस्रा मकनासनाय ह्रूं दमासनं नमः पुष्पं नमः॥ ॥ध्यानं॥
ॐ नागपाशधरं हस्तं नकोघघूर्णितविग्रहं नन्मकधवलं ध्याय वनूनंकेमे
लासनं ॥ वनूनाय ध्यान पुष्पं नमः॥ वंद ॥ ॐ ह्रूं मम वनून ॥ धूप दीप जाप
स्तोत्र ॥ ॐ नागपाश अकानिती जलनाअ महाबलः॥ निम्नपश्चिवविस्याभीना

पुष्पनाग २

गनाजायन नमः॥ वनूनाजर्ज्जनविक्षेपगल्लार्घ्वं विधियत्रिपूर्ब्बुमनस्तु ॥ ॥
पूजा॥ विशेषदान॥ सूवर्णु ॥ हल ॥ नील ॥ मनीका ॥ मूर्त ॥ ॥ खड्गमन्त्र ताजा
प यथाशक्ति॥ ॥ सूवर्णु हल नील मनी पुष्पनाग मूर्त ॥ थन्हानं विधि
थपूजायाय॥ धूप दीप जाप स्तोत्र॥ ॥ मालसाङ्का अक्षिक पूष्टिक
ॐ त्वक्षिनामिमी नाम्यादि॥ न्यास॥ सूर्य्यसाक्षि॥ ॥ ब्रह्मादि देव विसर्जन॥
ॐ उद्धयकस्व॥ ॥ दानकाय॥ विधिरथं॥ यथाशक्ति दक्षिणा॥ ॥
अतिथक॥ चन्दन ॥ पुष्प ॥ सकलसं ॥ ह्रूं ति पश्चरक मवनगाक्तिविधिसमाप्त॥

ॐ नऊउदगमाख्या गस्लाऊ नायू नासहऊथायँ वायू नकूमीऊथस
द नऊमी नवायँ दगमाख्याभूमऊ वायूनासह नऊ ह्यी नऊ ङ्किः याग
गक्षीऊ ३ स्येऊा नृहिनंन्यै भूगान्यक्ष्मगाऊ स्यनँमाजामसमऊिम० स्वा
हा पूनूदस्याविघूनूयॐ नू नमहिमानैधीन७ नकयदिद्वियदीं त्रि
यदीं वच्युस्यदीमस्वायदी वनानूयथक्ता०स्वाहा॥ भू यऊय॥
मा वानूयमस्लू नूयकमावद॥ लीखि सऊयलयँ मेनके॥ नूयूव
ननानँ॥

महेश्वरध्यानं॥ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाक
ल्पोज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नं॥ पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरग
णैर्व्याघ्रकृत्तिवसानं विश्वाद्यं विश्वरूपं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं॥

वैशाख शुक्ल द्वादश्यां पिपीली १५ की कुं

ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ ॥ अथ पिपीत की व्रत विधिर्लिख्यते ॥

आचमन ॥ सूर्यादि स्वस्त्यादि अर्घपात्र पूजा, आत्म पूजा ॥ ॥ ॐ नमो

भगवते वासुदेवाय आसनं ध्यानं पूर्वं नमः ॥ नमो वदार्चनं ॥

ॐ तत्वा यामीति सं पूर्णं ॥ नमो घट पूजनं ॥ ॐ ॥ ॐ गणानां त्वेति ॥

ॐ गणेशाय नमः ॥ ॐ इति मन्त्रेण पाद्य, स्नान, चन्दन, सिन्दूर, य

ज्ञोपवीत, आच्छादनादि पुष्पादि, धूप, दीप, नैवेद्य, तोषण ॥

एकदन्त महाकाय, लम्बोदर गजाननं । विघ्ननाश करं देवं,

४ सिन्दूराभं त्रिनेत्रं पृथुतर जठरं हस्तपद्मे दधानं, दन्तपाशाङ्कुशेष्टान्युरु करविलसद्बीजपूराभिरामं ॥

बालेन्दुद्योतिमौलिं करिपतिवदनं दानपूरार्द्रगण्डं, भोगीन्द्राबद्धभूषं भजत गणपतिं रक्तवस्त्राङ्गरागं ॥

हृत्स्थं गणमामन्त्र्य देहि ॥ आचमनादि ॥ ॥ अद्यादि अमुक गोत्रे

अमुक शर्माहं कलि पापोद्भव, यमलोक, गतिपरित्याग पू

र्वक विष्णुलोक प्राप्ति कामनया, श्री विष्णु पूजा पूर्वक पञ्चखाद्य

यथाक्रम, लवण, शर्करा, दधि, मोदक, तण्डुल, समय, वस्त्रा

च्छादित माल्यालंकृत वासीन, शीतलजल पूरित, ब्राह्मणसंप्र

दानक, चतुरष्ट कपर्दन, षोडश कुम्भ दानात्मक चतुर्वर्ष सा

ध्य पिपीडकी हादनी व्रतमहं करिष्ये ॥ । ॥ गन्धपुष्पाक्षतं

[illegible] यथा नो श्रेयस्करस्तथा नो वासवस्याद्यथात ॥

नमः षीजहदक्ष ॥ ९१ ॥ १३ ॥ ॐ नमो हुरूद्रायायपृथिव्यायषापन्नमिमवक्ष ॥ नत्या
दप्रावीर्द्दग [illegible] दग्ना उगीवीर्द्द भदीवीर्द्द [illegible] क्ष ॥ नत्यानमाजूरुमनो
[illegible] यरनुमयी ह्विष्मायश्व नाह्व त्रिनमषीउंजदक्ष ॥ १३२ ॥ पूनन्नमरू [illegible] या
[illegible] मानत्ता कं [illegible] न्तु कलिका षात [illegible] भुव ॥ ॐ नमरू रूद्र ॥ १३ ॥
ॐ [illegible] ॥ ॐ पूत रूद्र ॥ २ ॥ ॐ नमरू [illegible] नमत्ताविषनमरू [illegible] त्रिषं
[illegible] जूष्मल यन्तुद [illegible] यातकाम [illegible] ॐ [illegible] ॥ ॐ नमरू जूरु विद्यूनमरू न
नयिषं ॥ नर [illegible] ४ मत्रीदम ॥ ॐ नमो विदाधयडंमायमाना
[illegible] कमन [illegible] ज्ञा [illegible] नाजल्यावासूक [illegible] भामस्थवकि ॥

ASHA ARCHIVES 3116

|| ब्रह्मा हितं नमस्ते अस्तु भगवः पाहि महत्वं हे तस्मै च वरुण त्रिवर्णं नाः ||

ॐ विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट देव आदिद् गन्धर्वो अभवद् द्वितीयः । तृतीयः पिता जनितौषधीनां
मपां गर्भं व्यदधात् पुरुत्रा ॥ ॥ ॐ मीढुष्टम ॥ ॐ विकिरिद ॐ सहस्राणि ॐ असंख्या
ता ॥ ४ ॥ ॐ वयं सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥ १ ॥
एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राम्बिकया विकयानं जुषस्व स्वाहैष ते रुद्र भाग आखुस्ते पशु
॥ २ ॥ अव रुद्रम दीमह्यव देवं त्र्यम्बकम् । यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः
श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात् ॥ ३ ॥ भेषजमसि भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेष
जम् सुखं मेषाय मेष्यै ॥ ४ ॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारु
कमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम् । उर्वा
रुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ॥ एतत्ते रुद्रावसं तेन परो मूजवतोऽतीहि
अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहिंसन्नः शिवोऽतीहि ॥ त्र्यायुषं
जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥ शिवो ना
मासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः । निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रज
ननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धु
निश्च । सासह्वांश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा ॥ अग्निं हृदयेनाशनिं हृद
ना ।

गेगाय भुयतिं कल्ल हृदये ।

यौ नरंष्ट्रयक्त्रा । गर्वमस्तनस्वारा माग्मान [illegible] भामहा [illegible] कः यग्धिमा अन्दवं
[illegible] नावे । [illegible] भिज्ञा नि [illegible] म् ॥ ॥ उग्रं ला हिमन मित [illegible] सोवृध
नरूं [illegible] नरूणा वलन सा ध्या नृपमूदा । रवय कः [illegible] वरूरस्यान
[illegible] नस्य यक्ष [illegible] यवनि [illegible] यमयूनीनम् ॥ ॥ ॐ स्वस्तिन इन्द्रो
॥ ॥ ॐ वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्व
रश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १ ॥
ॐ प्राणश्च मे पानश्च मे व्यानश्च मे सुश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रो

त्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २ ॥ ओजश्च मे
सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मे ङ्गानि च मे स्थीनि च मे
परूंषि च मे शरीराणि च मे आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ३ ॥
ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मे मश्च मे म्भश्च मे जेमा च मे महिमा
च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे य
ज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ४ ॥ सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च
मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे

स्वह [illegible] यक्षनकल्यनाम् ॥ ५ ॥ स्वतङ्गम स्वगङ्गम यक्षवम नामयज्ञम
[illegible] स्वग्रम दावायूर्लवम नामित्तवम रायङ्गम सूरवङ्गम गयनङ्गम स्वधा
[illegible] देनङ्गम यक्षनकल्यनाम् ॥ ६ ॥ यक्षावम धर्लविम कूमग्रम धनिग्रम
विर्श्ववम महग्रमसंविज्ञम क्षातङ्गम स्वग्रम प्रहग्रम सीनेङ्गम लयग्रम यक्ष
नकल्यनाम् ॥ ७ ॥ नंवम मयग्रम प्रियङ्गम मनूकामग्रम कामग्रम सौमन
सग्रम लगग्रम उविर्लवम रुडङ्गम [illegible]यग्रम वसीयग्रम यनग्रम यक्षनक
ल्यनाम् ॥ ८ ॥ उङ्गम स्वन्नगावम ययग्रम नसग्रम घृतङ्गम मधुवम सन्धि

ग्रम सपीतिग्रम कृषिग्रम वृष्टिग्रम ॐ तङ्गम उो [illegible] ङ्गम यक्षनकल्यनाम्
॥ ९ ॥ [illegible] नायग्रम पूष्टङ्गम पुष्टिग्रम विशुवम प्रभुवम पूर्णङ्गम पूर्णगत्र
ङ्गम [illegible]यवंवम क्षितिवम नत्रङ्गम दूवम यक्षनकल्यनाम् ॥ १० ॥ विर्लवम वर्ष
वम ह[illegible]वम हविष्यग्रम स्वपथ्यङ्गम फ्रदंवम [illegible] क्षिग्रम क्षितिवम क्षिपिग्रम
म[illegible]ग्रम स्वपतिग्र मयक्षनकल्यनाम् ॥ ११ ॥ बीहयग्रम जवाग्रम माषाग्रम तिलाग्रम
[illegible]ग्रम खल्वाग्रम प्रियङ्गवम नवग्रम श्यामाकाग्रम नीवाराग्रम धूमाग्रम मसू
[illegible] यक्षनकल्यनाम् ॥ १२ ॥ अश्मावम मृत्तिकावम गिरयवम पर्वताग्रम सिका
[illegible] हिरण्यवम यग्रम श्यामंवम लोहंवम सीसंवम त्रपुग्रम यक्ष

न कल्पन्ताम्॥ १३ ॥अग्निश्च मे आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्ट
पच्याश्च मे ऽकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च मे वित्तं च मे वित्ति
श्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ १४ ॥वसु च मे वसतिश्च मे क
र्म च मे शक्तिश्च मे ऽर्थश्च म एमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥
१५ ॥अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म इन्द्रश्च मे सर
स्वती च म इन्द्रश्च मे पूषा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन
कल्पन्ताम्॥ १६ ॥मित्रश्च म इन्द्रश्च मे वरुणश्च म इन्द्रश्च मे धाता च म इ
न्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे मरुतश्च म इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा इन्द्र

मन्थी ४

श्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ १७ ॥पृथिवी च म इन्द्रश्च मे ऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे द्यौश्च म इ
न्द्रश्च मे समाश्च म इन्द्रश्च मे नक्षत्राणि च म इन्द्रश्च मे दिशश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ता
म्॥ १८ ॥अंशुश्च मे रश्मिश्च मे ऽदाभ्यश्च मे ऽधिपतिश्च म उपांशुश्च मे ऽन्तर्यामश्च म ऐन्द्रवा वा
यवश्च मे मैत्रावरुणश्च म आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्प
न्ताम्॥ १९ ॥आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च म ऐन्द्राग्नश्च मे महावैश्वदेव
[illegible] ल्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पात्नीवतश्च मे हारियो
[illegible] न्ताम्॥ २० ॥स्रुचश्च मे चमसाश्च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे
ग्रावाणश्च मे ऽधिषवणे च मे पूतभृच्च म आधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मे ऽवभृथश्च मे स्व

[illegible]भकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२१॥ अग्निश्च मे घर्मश्च मे अर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मे अश्व
[illegible]श्च मे [illegible] द्यौश्च मे अङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्प
न्ताम् ॥२२॥ व्रतं च मे [illegible] तपश्च मे संवत्सरश्च मे अहोरात्र उर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२३॥ एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त
च मे नव च मे नव च मे एकादश च मे एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च
मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मे एकविंशतिश्च मे एक
विंशतिश्च मे त्रयोविंशतिश्च मे त्रयोविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे
सप्तविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च मे एकत्रिंशतिश्च मे एक

षोडश च मे १
त्रिंशच्च मे त्रयस्त्रिंशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२४॥ चतस्रश्च मे अष्टौ च मे द्वादश च मे द्वाद
श च मे षोडश च मे षोडश च मे विंशतिश्च मे विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च
मे चतुर्विंशतिश्च मे अष्टाविंशतिश्च मे अष्टाविंशतिश्च मे द्वात्रिंश[illegible]श्च मे द्वात्रिंश[illegible]श्च मे
षट्त्रिंशच्च मे षट्त्रिंशतिश्च मे चत्वारिंशतिश्च मे चत्वारिंशतिश्च मे चतुश्चत्वारिंशति
[illegible]ष्टाचत्वारिंशच्च मे अष्टाचत्वारिंशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२५॥ त्र्यविश्च मे त्र्यवी च
मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाट् च मे
तुर्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२६॥ पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च मे उक्षा च मे वशा च मे ऋषभश्च मे
[illegible]नड्वा[illegible]श्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२७॥ वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहा
[illegible]द स्व स्वाहा दर्प्य नगस्वाहा अह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनंशिनाय स्वाहा

वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदितिं नाम वचसा करामहे। यस्यामिदं विश्वं भुवनमाविवेश
विश्वस्मिन्न्... स्वाहा ... व्यायसे भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये
स्वाहा प्रजापतये स्वाहा। इयं ते राण्मित्राय यन्तासि यमन ऊर्जे त्वा वृष्ट्यै त्वा प्रजानां
त्वाधिपत्याय ॥ २८ ॥ आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां०
श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा य
ज्ञ्योतिर्यज्ञेन कल्पतां० स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पतां। स्तो
मश्च यजुश्च ऋक्च साम च बृहच्च रथन्तरञ्च। स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम प्रजापतेः प्र
जा अभूम स्वाहा ॥ २९ ॥ ओं ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः
श्रोत्रं प्रपद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ ॥ १ ॥ यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदय
तस्यां नो देवः सविता धर्म साविषत् २॥

स्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु। शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥ २ ॥ ओं तत्सवि
तुः० भयरीयं० मू ॥ ३ ॥ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता
॥ ४ ॥ कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु ॥ ५ ॥ अभी षु णः स
खीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतिभिः ॥ ६ ॥ कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्।
कया स्तोतृभ्य आ भर ॥ ७ ॥ इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ८ ॥
शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा। शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ॥ ९ ॥
शन्नो वातः पवतां शन्नस्तपतु सूर्यः। शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु ॥ १० ॥
अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रीः प्रति धीयताम्। शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इ

आधे [illegible] कामयो भुवस्तान त्रुज्जेदधातन महेरणायवक्षमे। थोवः
शिवतमो [illegible] सस्तस्य भाजयतेहनः उनेरुं। रिवमातरः। न स्मा अरं
[illegible] पृषदश्ववाजसा [illegible] मामास विनायनंथाः॥ ११ ॥ णमोद
[illegible] स्यश्रापा [illegible] तेरा। नेथा [illegible] वकुनः॥ १२ स्यानाप्तायेवीनारवान्वक्कनालिव
[illegible] सखथाः॥ १३ ॥ श्रातिहूरा॥ १४ ॥ यावः निवनि॥ १६ ॥ नमस्माश्रुवंगति॥ १७ ॥
[illegible] ॥ दुनदु० दुमामितुस्यमाचक्कुवासर्वोदिहूनालिसमीद्धंनी। मितुस्या
दच क्कुवासर्वोनिहनानिसमीद्धू। मितुस्यचक्कुषासमीक्षामहे॥ १८ ॥ दुनदुन० हमाक्षी
कसीदृमिक्षीयासंक्षाकसंदृमिक्षीयासी॥ १९ ॥ नमस्कुहुवरंणधमा। विमनमस्कृश्रुस्त्वद्विषे
। न्यास्कश्रुस्तलपकुहनयः पावकाश्रस्मरय० मिवालव॥ २० ॥ नमस्कश्रुस्तुविद्युतनमस्ते
स्कुनयित्नव। नमस्कलगवन्नस्तुयस्वःसमीहसे॥ २१ ॥ यतायतः समीहसमीहसे नमाना

[illegible] मवायम्दक्षयायाजन्वथ आयाजनयथावनः॥ ८

श्रस्यंवद्। न्नः कृनूपक्काश्यश्लयनः यत्तुरु॥ २२ ॥ हमितियान आयडाषधयः सन्तु
[illegible] सोसन्तुया स्मानुद्धेष्टियंचवयंद्विष्मः॥ २३ ॥ तञ्चक्षुर्द्देवहितंपुरस्ताच्छुक्रमु
च्चरत्। पश्येमशरदः शतंजीवेमशरदः शतंशृणुयामशरदः शतंप्रब्रवामशरदः
[illegible] मदीनाम्स्यामशरदः [illegible] स्यप्रशरदः शतात्॥ २४ ॥ [redacted] ॥ ॐ इति रुद्रा लिख कध
[illegible] मा [illegible] ॥ [illegible] क्षणायाचूलिस। लियायाचूलिस। पडयः दधु
[illegible] ॥ ११ [illegible] लियविमालः पूजाधु
[illegible] पूर्वाह्नेलिहक्वोर पूनः श्री [illegible] वचा। एव [illegible] नमस्तेध्व नेमावि
थउवचा। [illegible] इति [illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥ शुभं॥